Padma Bhushan



Swami Satyamitranand Giri

Swami Satyamitranand Giri is a renowned spiritual guru.

2. Born on September 19, 1932, Swami Satyamitranand Giri graduated in scriptural studies and showed strong inclination towards asceticism, spirituality, tendency for human service and a strong fervour for national integrity. At 21, he rose to fame as the editor of a philosophical magazine 'Gita Sandesh'. He has been an orator Par Excellence and is proficient in more than 10 languages. At 27, he was appointed as the Shankaracharya of Bhanpura Peeth (a Branch of Jyotish Peeth, Himalayas). He held this post for ten years. After this, he decided to spread the ancient Indian knowledge outside the country and toured more than 50 countries world-wide.

3. Swami Giri's extensive travels revealed to him a gross indifference of the society towards Vedic values and the glorious heritage of ancient India. He strongly felt a desperate need to reunite and revive Indian philosophical culture according to the modern context and developed the concept of 'Samanvaya' (Harmonious co ordination) of the religious and social ethos. The epitome of Swami Giri's 'Samanvaya' theory and the doctrine of 'Harmonious Co-existence' can be witnessed in the form of the world renowned 'Bharat Mata Mandir' situated on the banks of the Holy Ganges at Haridwar. The temple is a supreme symbol of national integrity and religious unity. It is a proud representation of the glorious ancient heritage of India.

4. With an aim to carry out charitable, humanitarian and religious activities, Swami Giri founded Samanvaya Seva Trust & Bharatmata Janhit Trust & Swami Satyamitranand Foundation at Haridwar. There are many centres of Samanvaya Parivars functioning all over India and in various parts of the world, prominent among them are: the Samanvaya Parivars of Jodhpur, Jabalpur, Faridabad, Mumbai, Renukut, Haldwani, Ujjain, Bhavanimandi, Ratlam, Ahmedabad, Baroda, Gwalior, etc. & London, Leicester, Ontario, Toronto, USA, Uganda, Kenya, Portugal amongst other parts of the world.

5. Swami Giri has also been involved in various philanthropic activities such as relief work for earthquake victims in Gujarat, Latur, Jabalpur & Tsunami victims; organised free Polio Camps, Eye Camps for the Poor; Free distribution of wheel chairs, tricycles crutches, and other such aids; Free distribution of food to saints & the poor on daily basis. He has established Swami Satyamitranand Giri Intermediate College at Haripur, Uttarakhand and a free Physiotherapy Centre at Haridwar equipped with an ambulance and free distribution of medicines. He has been instrumental in De-addicting thousands from liquor & drug. He has also delivered speeches in jails which transformed lives of prisoners and convicts. He participated in the Peace March to Punjab with other religious leaders of India in the aftermath of post 'Blue Star' days.

6. Swami Giri was nominated as the Man of the Year by the American Biographical Society twice. The Government of Canada issued a postal stamp in his honour.

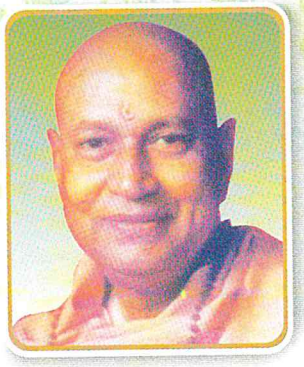

स्वामी सत्यामित्रानन्द गिरि

स्वामी सत्यामित्रानन्द गिरि एक सुविख्यात आध्यात्मिक गुरु हैं।

2. आपका जन्म सितम्बर 19, 1932 को हुआ। आपने धर्मग्रंथ अध्ययन में स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा तप, आध्यात्मिकता, मानवता की सेवा के प्रति गहरी रूचि तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति जबरदस्त समर्पण-भाव प्रदर्शित किया। 21 वर्ष की आयु में दर्शन-शास्त्र संबंधी पत्रिका 'गीता संदेश' के संपादक के रूप में आपकी ख्याति फैली। आप एक उत्कृष्ट वक्ता हैं तथा 10 भाषाओं के जानकार हैं। 27 वर्ष की आयु में आपको मानपुरा पीठ (ज्योतिष पीठ, हिमालय की एक शाखा) का शंकराचार्य नियुक्त किया गया। आप दस वर्षों तक इस पद पर आसीन रहे। इसके बाद आपने देश के बाहर प्राचीन भारतीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने का निर्णय किया और इस क्रम में आपने पूरे विश्व में 50 से अधिक देशों का दौरा किया।

3. आपको इन यात्राओं के दौरान वैदिक मूल्यों तथा प्राचीन भारत की शानदार धरोहर के प्रति समाज की अत्यधिक असंवेदनशीलता का अनुभव हुआ। आपने आधुनिक संदर्भ में भारतीय दर्शन की संस्कृति को फिर से जोड़ने तथा उसमें नई ऊर्जा का संचार करने और धार्मिक एवं सामाजिक सरोकारों के 'समन्वय' (सामंजस्यपूर्ण समन्वय) की तत्काल आवश्यकता महसूस की। आपके 'समन्वय' वाद तथा 'सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व' सिद्धांत की पराकाष्ठा, हरिद्वार में पवित्र गंगा नदी के किनारे स्थित विश्व प्रसिद्ध 'भारत माता मंदिर' के रूप में देखी जा सकती है। यह मंदिर राष्ट्रीय अखंडता और धार्मिक एकता को प्रतिबिंबित करता है। यह भारत के प्राचीन वैभवशाली विरासत की गौरवपूर्ण प्रस्तुति है।

4. धर्मार्थ, मानवता संबंधी तथा धार्मिक गतिविधियां चलाने के उद्देश्य से आपने हरिद्वार में समन्वय सेवा ट्रस्ट, भारत माता जनहित ट्रस्ट और स्वामी सत्यमित्रानंद फाउंडेशन की स्थापना की है। समन्वय परिवार के कई केन्द्र पूरे भारत वर्ष तथा विश्व के अनेक हिस्सों में संचालित किए जा रहे हैं। इनमें से प्रमुख हैं: जोधपुर, जबलपुर, फरीदाबाद, मुम्बई, रेणुकोट, हल्द्वानी, उज्जैन, भवानीमंडी, रतलाम, अहमदाबाद, बड़ौदा, ग्वालियर आदि तथा विश्व के अन्य स्थलों सहित लंदन, लिसेस्टर, ओंटारियो, टोरंटो, यूएसए, उगांडा, कीनिया, पुर्तगाल का समन्वय परिवार।

5. आप विभिन्न परोपकारी सेवाओं जैसे गुजरात, लातुर, जबलपुर में भूकंप पीड़ितों के लिए राहत कार्य, सुनामी पीड़ितों के लिए राहत कार्य, निर्धन लोगों के लिए नि:शुल्क पोलियो, नेत्र शिविरों का आयोजन, व्हील चेयरों, ट्राइसाइकिल क्रचों तथा अन्य सहायक सामग्रियों का नि:शुल्क वितरण, दैनिक आधार पर साधुओं और निर्धन लोगों के लिए नि:शुल्क भोजन संबंधी सेवाओं में शामिल रहे हैं। आपने हरिपुर, उत्तराखंड में स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि इंटरमीडिएट कॉलिज तथा हरिद्वार में नि:शुल्क फिजियोथेरेपी केन्द्र की स्थापना की है जहां एंबुलेंस मौजूद है तथा दवाइयां नि:शुल्क वितरित की जाती हैं। आपने शराब तथा मादक द्रव्यों की लत से हज़ारों लोगों को मुक्त कराने में अग्रणी भूमिका निभाई है। आपने जेल-परिसरों में जाकर व्याख्यान दिए हैं, जिनके कारण कैदियों और दोषसिद्ध व्यक्तियों के जीवन को नई दिशा मिली है। आपने 'ब्लू स्टार' के बाद के दिनों में भारत के अन्य धार्मिक नेताओं के साथ पंजाब तक शांति यात्रा में भाग लिया था।

6. आपको अमेरिकन बायोग्रॉफिकल सोसायटी द्वारा दो बार मैन ऑव दि ईयर मनोनीत किया गया है। कनाडा सरकार ने आपके सम्मान में डाक टिकट जारी किया है।